

संपादकीय

निकाल लिया रास्ता

सरकारी विभागों में छोटा से छोटा काम भी बिना रिशत के करा लेना बहुत उपलब्ध मानी जाती है। हालांकि केंद्र और राज्य सरकारों ने इस पर अंतुष्ठान लाने के लिए डिजिटल प्रणाली से पंचीकरण, लेन-देन आदि की व्यवस्था कर रखी है, मगर उसके समान अधिकारियों-कर्मचारियों ने रिशत और कामीशन का अपना रास्ता निकाल रखा है। मौजूदा केंद्र सरकार के अहम वादों और प्राप्तियों में भ्रष्टाचार सरकार कर्मचारी सरकार रहा है। मगर पिछले कुछ समय से जिस तरह नियन्त्रक एवं महालेखा प्रधानों और दूसरी जांचों की राटे आ रही हैं, उन्हे देखते हुए स्पष्ट है कि भ्रष्टाचार पर कानून पाना इस सरकार के लिए भी बुन्हती रहा है। कैफियत सरकारी आयोग यानी सीरीजों की ताजा रपट के मुताबिक पिछले वर्ष केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों में एक लाख पंद्रह हजार से अधिक अधिकारियों के खिलाफ अनियमितता की शिकायतें दर्ज हैं। अधिकारियों-कर्मचारियों के खिलाफ दर्ज की गई। उनमें से करीब आधी शिकायतों का निपटारा हो गया, मगर बाकी अब तक लिया गया है। उनमें से भी करीब दो तिलाइ मामलों का निपटारा तीन महीने से अधिक समय से लिया गया है। जारी रिपोर्ट के खिलाफ सीरीजों को ऐसी शिकायतों का निपटारा तीन महीने के भीतर कर दिया गया है। अधिकारियों-कर्मचारियों के खिलाफ अनियमितता की शिकायतों का निपटारे में दर्जी एक लाख पंद्रह है, जिसकी वार तय है कि जिस मात्रावाच पर कानून-व्यवस्था सुधारने की जिम्मेदारी है, उसी में भ्रष्टाचार की शिकायतें सबसे अधिक दर्ज हुईं। मौजूदा सरकार का पहले कार्यकाल से ही वादा यह कि शून्य भ्रष्टाचार वाली व्यवस्था लायी रखनी है। मगर केवल केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों पर एक लाख पंद्रह लाख से ऊपर भ्रष्टाचार की शिकायतें एक वर्ष में दर्ज हुईं, तो अदाजा लायाया जा सकता है कि नियंत्रण स्तर पर दूसरी क्या शिकायत होगी। जो केंद्र सरकार खुद अपने महत्वपूर्ण विभागों के अधिकारियों-कर्मचारियों को भ्रष्टाचार सुन्दर व्यवहार के लिए अवश्यिकी नहीं कर पाया, तो अधिकारियों-कर्मचारियों के खिलाफ लड़ाई पर स्वाल उठने रायभाविक है। जो मामले निपटा दिए गए, उसका यह अर्थ नहीं कि उनमें भ्रष्टाचार हुआ ही नहीं था। इल्ली बहुत संख्या में अनियमितता की शिकायतें मिलना ही अपने आप में इस बात का संकेत है कि सरकार की नाक के नीचे भ्रष्टाचार चल रहा था।

Quote...

The future belongs to those who believe in the beauty of their dreams.

-Eleanor Roosevelt

11-21-21
MORARI BAPU



सत्य-द्रेस-करना...

जीवन में एक पंथ हो... एक मार्ग निश्चित हो... हमारे बेद भगवान ने हमें तीन मार्ग बताए... ज्ञान मार्ग... कर्म मार्ग... उपासना मार्ग... हमें कोई एक मार्ग निर्णय करना चाहिए... एक पंथ निर्णय हो... हम भटकाव में ना रहे... ज्ञान मार्ग को... कृपया वह भक्ति मार्ग की आलोचना ना करें... व्यक्ति अंतरोगता तीनों चाहिए...

॥ रामकथा ॥ ज्ञानस गुण वंदना ॥

वर्ण - Chitrakarshana Tatyayogika

Health is Wealth

मच्छरों के काटने पर होती हैं ये 4 बीमारियां

बाइथिक के मौसम में होता है ज्यादा खतरा

वै से तो मछर पूरे साल परेशान करते हैं, लेकिन बारिश के मौसम में खतरा बढ़ जाता है। मछर के काटने पर यूं तूं लाल रंग के खुजलीदार दाने हो जाते हैं, लेकिन मानसून में इनके काटने पर गंभीर बीमारियां हो सकती हैं। विश्व मछर दिवस एक रमेशल दिन है जो मछरों और उनसे होने वाली बीमारियों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए समर्पित है। यह हर साल 20 अगस्त को दुनिया भर में मनाया जाता है। इस दिन पर जानिए मछरों के काटने से होने वाली

चार बीमारियों के बारे में, जिनका खतरा बारिश के मौसम में बढ़ जाता है।



विकासनगरिया

विकासनगरिया एक बायरिट बूझौर है, जो सरकारी मरकारों के काटने से होती है। इस विकासनगरियों को कैलेनने वाला व्यवस्था एक पर्याप्ती में मछरों को बोने लाते हैं तो तो इसके लकड़ी में अंगूष्ठ तथा घोलों में दर्द, मांसांगोलों में दर्द, जोड़ों में दर्द, जैसे भूर्धा, छक्की, सिराव आदि आम हैं।

डेंगू

बायरिट के गौमध्य में डेंगू का खतरा काफी ज्यादा बढ़ जाता है। डेंगू एडोन मचर द्वारा

फैलता है, जो केवल हूट पानी में प्रवान करके बीमारी कैलानता है। ये बच्चों की हासिलती, जैसे गंभीरी को कैलेनने वाला व्यवस्था एक पर्याप्ती में मछरों को बोने लाते हैं तो सरकारी विकासनगरियों द्वारा फैलता है। इसके समान लकड़ी में भूखरा सरकारी विकासनगरियों में से एक है। मानसून के दौरान विकासनगरियों से पौंछितों की संख्या बढ़ जाती है।

मलेरिया

मलेरिया एक कौमयन बीमारी है, जो मचर जनत विकासनगरियों में से दर्क है। मानसून के दौरान मलेरिया से पौंछितों की संख्या बढ़ जाती है।

यह अमरीका पर मचरों के काटने से व्यवस्था में फैलता है। स्थानीय में बुज्जा, ठंड लगान, सिरावट, मर्गीरीमांगों में दर्द, और घृन जैसे लकड़ी दियते हैं।

जीका वायरस

जीका वायरस भी एकीज मचरों से फैलता है। इसके लकड़न डेंगू जैसे ही होते हैं। जिसमें जीका वायरस द्वारा एक लाल अंडे लकड़ी दियते हैं। इस लाल अंडे लकड़ी वायरस द्वारा एक हल्के लाल वायरस द्वारा लकड़ी है।

Highlights

1. In one month, over 45,000 kg tomatoes sold through ONDC, says platform chief

2. PM Modi to become 1st Indian PM to visit Greece after 40 years

3. Passenger vomits blood mid-air on IndiGo flight from Mumbai, dies

4. PM Modi departs for South Africa to participate in BRICS Summit

5. 'Moosewala was a terrorist,' says Jharkhand policeman; apologises as video goes viral

In one month, over 45,000 kg tomatoes sold through ONDC, says platform chief

NEW DEIHI, (Agency).

In one month since ONDC (Open Network for Digital Commerce) began selling tomatoes at discounted prices, the platform has fulfilled approximately 22,500 orders worth 45,000 kg of the vegetable in and around Delhi-NCR, its chief T Koshy said on Monday.

On July 21, ONDC began selling tomatoes in the face of soaring rates of the vegetable.

"Till date, we have facilitated the delivery of approximately 22,500 orders for 45,000 kg of tomato around the Delhi-NCR (National Capital Region). We make these available at 9am every day, and in a matter of minutes, these get sold out," Koshy told Moneycontrol.

He further stated that in the initial days, 2000 kg was being sold each day, with this being the daily limit fixed for it by the National Cooperative



Consumer Federation (NCCF), adding that the stocks lasted only for only a few hours.

"Within a week, however, we started seeing enhanced sales, with the stocks flying off our shelves within minutes of being made available," he said.

Koshy also noted that it is for the NCCF to decide for how long the latter wants the association to continue. On July 14, NCCF and NAFED (National Agricultural Cooperative

Marketing Federation of India) began retail sales of the vegetable in Delhi-NCR, when the commodity's rates, in an unprecedented rise, reached ₹250 per kg in several markets of the country.

ONDC and NCCF then joined hands to make tomatoes available at discounted prices. The rates were fixed at ₹90 per kg; on August 15, however, it was priced at ₹50 per kg, and ₹40 per kg starting August 20.

Reliance's Jio Financial Services hits limit-down on debut, valued at \$19 billion

Mumbai, (Agency).

Investors expect Ambani to give more details about JFS during the Reliance annual general meeting on Aug. 28.

Shares in India's Jio Financial Services (JFS), carved out of billionaire Mukesh Ambani's Reliance Industries, fell limit-down on Monday at its trading debut as investors waiting for more clarity about the scope of the business cashed out of the stock.

Mr. K V Kamath (Independent



Director and Non-Executive Chairman, JFSL), Mr. Subhash S Mundra (Chairman, BSE), at the Listing Ceremony of Jio Financial Services Limited on the Bombay Stock Exchange, in Mumbai, India, on Monday, August 21, 2023. (Photo by Anshuman Poyrekar/Hindustan Times)

Poyrekar/Hindustan Times)

Mr. K V Kamath (Independent Director and Non-Executive Chairman, JFSL), Mr. Subhash S Mundra (Chairman, BSE), at the Listing Ceremony of Jio Financial Services Limited on the Bombay Stock Exchange, in Mumbai, India, on Monday, August 21, 2023. (Photo by Anshuman Poyrekar/Hindustan Times)

Ambani's Reliance had last month spun off JFS, with the stock price set at 261.85 rupees during a special discovery

session, valuing JFS at around 1.7 trillion Indian rupees (\$20.5 billion).

That price, however, was higher than the 160-190 rupees per share estimate by five analysts who spoke to Reuters before Reliance set the price. On Monday, JFS stocks fell 5% - the most it can fall in a session - shortly after it started trading, with over 73 million shares changing hands, reducing its valuation to 1.58 trillion rupees (\$19 billion).

